Daily Gospel Reflections in Hindi

27 July 2019

योहन 12: 20-26

BE LIKE GRAIN OF WHEAT THAT IS DROPPED INTO THE GROUND AND DIES

''जब तक गेहूं का दाना मिट्टी में गिरकर मर नहीं जाता, तब तक वह अकेला ही रहता है''– यह एक स्वाभाविक बात है। यह प्रभु ने अपने खुद के बारे में कहा, अपने मिशन–कार्य की परिणती (Culmination) के बारे में कहा। यह शायद प्रभु के लिए ईश्वर द्वारा भेजा गया एक चिन्ह था कि यूनानी उन्हें ढूंढते चले आ रहे हो। जिस प्रकार योहन बप्तिस्मा के लिए एक चिन्ह रहा होगा कि प्रभु योहन से बप्तिस्मा ग्रहण करने के बाद स्वयं बप्तिस्मा देने लगे (Jn. 31:26)।

यूनानी जब येरूसालेम में प्रभु को ढूंढने लगे, तब प्रभु को अहसास हुआ होगा कि अब समय आ गया है (Jn. 12:23)। अब अपनी मिशन की समाप्ति का समय आ गया है। और प्रभु जानते थे कि उनकी मिशन का अन्त कैसे होगा। अब तक प्रभु मात्र गलीली का एक छोकरा था, जिसे अनपढ़, गवार देहाती लोग नबी मानने लगे थे। यूनानियों के आने का मतलब है, प्रभु मसीह न केवल गलीली या इस्राएल के उद्धार के लिए आये थे, बल्कि सारी मानव जाति के उद्धार के लिए अवतरित हुएथे (Rom. 8:22,23)।

प्रभु जानते थे कि अपनी महिमा कब और कैसे सम्पन्न होगी। अपने बप्तिस्मा के बाद प्रभु निर्जन प्रदेश में चालीस दिन और रात प्रार्थना में रहे। तत्पश्चात शैतान उनकी परीक्षा लेने लगे (Mt. 4:1-11)। परीक्षा के दौरान शैतान ने प्रभु को दुनिया की नजर में महिमा पाने का प्रलोभन देने लगे। लेकिन प्रभु को मालूम था कि उनका रास्ता अलग है। ''मैं मनुष्यों की ओर से सम्मान नहीं चाहता'' (Jn. 5:41)। बाद में अपने ही भाइयों से उन्हें प्रलोभन मिला कि वे यहूदिया जाकर पर्व के समय बड़ी भीड़ के सामने अपना चमत्कार दिखाये (Jn. 7:2-4)। लेकिन प्रभु ने कहा – ''अब तक मेरा समय नहीं आया है (Jn. 7:5)।

लेकिन अब समय आ गया है कि गेहूं का दाना मिट्टी में गिरकर मर जायें, अब समय आ गया है कि प्रभु को मरना होगा, तीन दिनों तक दफनाया जाना होगा। तभी तो वे सारी मानव जाति को अपनी ओर आकर्षित कर पायेंगे। ''मैं जब पृथ्वी के ऊपर उठाया जाऊँगा, तो सब मनुष्यों को अपनी ओर आकर्षित करूंगा'' (Jn.12:32)।

ईश्वर का विधान पूरा करने में सबसे बड़ी बाधा हमारा अहम् है। यह बात आदम से लेकर आप और हम में लागू है। जिस प्रकार पिता इब्राहिम द्वारा बली चढ़ाये जाने को इसहाक तैयार हुए (Gen. 22:1-12), जिस से ईश्वर का विधान पूरा हो, उसी प्रकार जब तक हम अपने अहं को त्याग कर प्रभु का अनुसरण न करें, तब तक हमारे जीवन में भी ईश्वर का विधान सम्पन्न नहीं होगा।

Rev. Fr. Rojan Chirayath

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019